जहीर कुरेशी

पिता

कथनी से करनी तक है
कितना कमजोर पिता
''चोरी है अपराध''
सीख देता है चोर पिता

घर से लेकर सरकारों तक
यही फजीहत है
शिक्षक, नेता, पिता–धर्म का
काम नसीहत है

कूटनीति से खींच रहा है
घर की डोर पिता
''चोरी है अपराध''
सीख देता है चोर पिता

केवल मां का प्यार प्राप्त कर
बच्चे बड़े हुए
बच्चे गलत पिता के सम्मुख
तन कर खड़े हुए

उस दिन से–
अनुशासन पर देता है जोर पिता
''चोरी है अपराध''
सीख देता है चोर पिता

घर से भागे हुए पिता ही
देश चलाते हैं
इसीलिए वे
जिम्मेदारी से कतराते हैं

घर से लेकर सरकारों तक
है हर ओर पिता,
''चोरी है अपराध''
सीख देता है चोर पिता

('नये–पुराने' गीत अंक–1, नवम्बर–1997 से साभार)

घर आंगन का गीत

सड़कों की दुर्घटनाओं से
तो बच लेते है,
घर–आंगन की दुर्घटनाओं से
कैसे बचिए

दिन भर में सौ गाली बकता
पेंशन प्राप्त पिता
दिन भर मां रटती है
इस जीवन से भली चिता

तीस वर्ष के निकट खड़ी
बहिना गुर्राती है,
उसकी शादी की चिंताओं से
कैसे बचिए

एम.ए. पास अनुज
सत्ता को गाली दे–देकर
घूमा करता है
हाथों में डिग्री को लेकर

उससे छोटे भाई को
क्षय की बीमारी है,
उस गरीब की
दूध–दवाओं से कैसे बचिए

और उधर बागी पत्नी का
अपना तेवर है
जिसका प्रायः पति के स्वर से भी
ऊंचा स्वर है

बारूदी घर–आंगन में
अंगारों से रिश्ते,
विस्फोटों की आशंकाओं से
कैसे बचिए।

सम्पर्क–
सूर्यनगर
शब्द प्रताप आश्रम के पास
ग्वालियर (म.प्र.)